मंदिर क आरोग्य।.

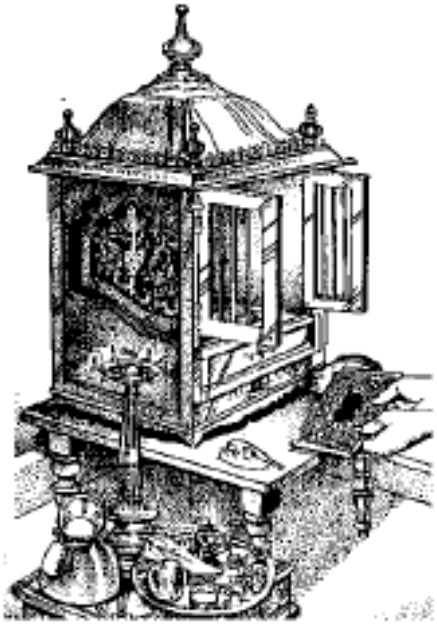

ई नुकसान बाचाव्यं

ई समयं रोज हजारन मंदिर में हजारठे नारियल फोडके ओकर पानी फेक देथेनं।. मंदिर में भग्वान के सामन्यं नारियल फोडके बाद ओकर पानी बेकार होय जाथं।. अईसन नारियल से 50 से 250 मि.ली. पानी होथं।. ई पानी पौष्टिक होथं।. ई पानी बजारेमें मिलयवाला 6-7 रु. के. कवनव भी पिययं के समानेसे कई गुना पौष्टिक होथं।. एक हाथे में नारियल रख दुसरे हाथें से ओके फोडके ओकर पानी एक बर्तन में एक साथ भक्तजन अऊर पुजारी न के पिययके चाहीं।. आजय नम्रता से जानकारी अपने गांव के मंदिर के पुजारीनं अऊर अन्य जन के बताव्यं।.

मंदिर क तीर्थप्रसाद अऊर स्वास्थ्य -

कलकत्ता में समाज स्वास्थ के विषय पे काम करयं बिना ऑईल इंडिया इंस्ट्रीट्यूट ऑफ हायजीन एन्ड पब्लीक हेलथ नामक संस्था बां। ई संस्था क प्रोफेसर के.जे.नाथ ऐन कलकत्ता में कालीमाता के सयें 24 मशहूर मंदिर क तीर्थ प्रसाद क निरिक्षण किहेनं।. निरिक्षण में 24 मे से 17 तिर्थे में आदमीयन के मईल में पाव्यवाला

. कोयाल नामक जन्तूं आदमीयन के सेवन बिना घातक मात्रा में देखलं गयलं बां।. (ई जानकारी इंडियॉ टुडे के दि. 28/02/1993 के अंक में प्रकाशित बां।) ईहय् हालत देश के अवरव मंदिर के तिर्थ स्थान में होय

सकथं।. ऐके बदल्य के चाही।. ऐकरे बीना आपन सभे का कई सकथं?

मंदिर के साफ रखयं बिना ब्लिचिगं पावडर, फिनाईल इस्तेमाल करयं के चाहीं।. मंदिर में हाथ, गोळ, धोव्य बीना साबून होव्यके चाहीं।. हर एक मंदिर में साफ संडास, पेशाब घर अऊर पिययंक पानी बीना साफ नल अऊर टंकी होव्य के चाहीं।. ईहा पानी क टक्की हर 6 महिना बाद अंदर से साफ करत रहयं के चाहीं।. पीययं के पानी में भी ब्लिचींग पावडर डालयं के चाही। भग्वान के जवने पानी से साफ करथेन ओम्मा भी थोडा ब्लिचिंग पावडर डाल्यके चाही।. ई पावडर नगरपालिका, ग्रामपंचायत, शास्कीय प्राथमिक स्वास्थ केन्द्रं में मुफ्त देथं।.

ई ब्लिचिगं पावडर सील बंद डब्बा में रखयं के चाहीं। अगर ई पावडर खुलल रखा होईत औम्मा मवजूद क्लोरीन क मात्रा कम होई के ओकर प्रभाव (असर) कम होथं।. 1000 मि.ली. में 2-3 ग्राम ब्लिच पावडर डालयं के चाहीं।. मंदिर क पुजारीन अऊर अन्य कर्मचारीन क हर 6 महिना बाद स्वास्थ परिक्षण करय के चाही अऊर केहूके अगर बिमारी होईत ओकर खर्चा भी मंदिर में से मिल्य के चाही।. मंदिरे में काम करयं वाले पूजारिन अऊर कर्मचारी के टाईफाईड क टिक्का हर साल लगाव्यं के चाहीं।.टिका लगाव्य के बाद मंदिर के तिर्थप्रसाद से केहूके विषमज्वर न होई।.

होय सकीत ई पुस्तक क एक प्रती मंदिर में भेट करयं।. ऐके ऊहां क पुजारी अऊर भक्तजन भी पढिही।. लेकीन ऐके न फाडयं के बा न खराब करयं के बा।. ऐहिबीना मंदिर के सभागृह में एखाद रस्सीसे कवनव खंबा से बांधके रखयं के चाहीं।.

तीर्थक्षेत्र के होटल भी बीमारी क प्रसाद देथेनं।. ध्यान रखयं।.

सार्वजनिक सुलभ शौचालय बनाव्यक चाहीं।. भग्वान के पईसा चढाव्य के जगह अईसने कामेमें मदत करयं के चाहीं।. अपने गांव अऊर शहरे में नया पुतला, नया मंदिर या बाग- बगीचा बनाव्य के पहिले मंदिर के पहिले सुधारयं अऊर बाद में उहॉ सार्वजनिक पिवयवाला पानी क अऊर शौचालय बनाव्य के ओके साफ सुधरा रखयं के बां।. अपने देश में आजव घरेके बहरे जाऐपे औरतन बीना कबाव भी पेसाब

घर नाय।. वईसन व्यवस्था करयं के चाही।.

देशभरे में ऐकर जांच होव्य के चाहीं।. बीमार व्यक्ती बीना प्रार्थना करयं बीना लोग मंदिरे से बीमारी न लेयजाएं। पुरे देश में ऐकर जांच होय या न होई लेकीन गांव में कुछ उपाय करयं के चाहीं।. ईहा हवा ठिक तरीका से नाय चल पावतथं, खिडकी नाय होव।. ऐकरे अलावा दिया, आरती, अगरबत्ती क धुवॉ आदि से दम घुटय लगथं।. भीडी के वजह से मंदिरें में घुटन सी होथं।. फल के रूप में भक्तंन के भग्वान क दर्शन ठिक तरिकासे नाय होय पावतं। कब बहरे निकलब अईसन लगयं लगथं।. जवन पुजारीन घटां तक ऊही माहोल में रहथेनं ओन्हन क सेहत खराब होथं।. धुआँ के वजह से फेफंडा, सांसनली खराब होय जाथं।. प्राणवायू क अपूर्ति कम होय जाऐसे शरीर क सब भाग क काम करयं क क्षमता कम होय जाथं।. बीमारी बढथं। जीवन क सुख अऊर उम्र भी कम होय जाथं।.

तरिका -

1) मंदिर के विश्वस्त समितीने समाजेके कार्यमें रुची रखयवालें एक्खे डॉक्टर अऊर एक्खे सिव्हिल इंजिनियर के रखयं के चाही।.

2) मंदिर क दलान बडा करयं के चाहीं।.

3) ओकर खिडकी बड़ी होव्यके चाही।.

4) अगरबत्ती, दिया आदि बहरे खुली जगह पे रखयं के चाही।.

5) भग्वान के पास तेल क दिया होव्यके चाहीं।. बाकी जगह पे बिजली क दिया होव्यके चाहीं।.

6) ज्ञानी सिव्हील इंजिनियर के सलाह से हवा, पानी, बिजली क व्यवस्था करयं के चाही।.

मंदिरेक सफाई।.

मंदिर क पुजारी नहाय के बादय में जाथेनं।. अईसन होव्यके बाद भी पुजारी मंदिर जाऐके पहिले साबून से हाथ, गोड धोव्यके चाहीं।. काहिकेकी ओन्हयं के हाथेसे तीर्थ कुल भग्तजन ग्रहण करथेनं।. एक वक्त पे मंदिरयं समाज क सांस्कृतीक केद्रं होत रहांहं।. अभव भी होव्यके चाहीं।.

हड्डी में सुई डालके सलाईन देव्यसे लडिक्याॅ बचथेन।.